

**स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)**

**(बी. ए. जी.)**

**सत्रांत परीक्षा**

**जून, 2025**

**बी.एस.के.ई-141 : आयुर्वेद के मूल आधार**

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

---

**नोट :** इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड से प्रश्न के उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक अंकित हैं।

---

**खण्ड—क**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5×15=75

(क) आयुर्वेद के प्रयोजन, लक्षण और महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) शरद ऋतु के ग्रहणीय और अग्रहणीय तत्वों की समीक्षा कीजिए।

- (ग) भृगुवल्ली क्या है? उसमें प्रतिपादित नैतिकता का वर्णन कीजिए।
- (घ) चरक संहिता (सूत्रस्थानम्) का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- (ङ) आयुर्वेद के अनुसार 'निदान पञ्चक' की व्याख्या कीजिए।
- (च) आयुर्वेद की धन्वन्तरि और पुनर्वसु पद्धति की व्याख्या कीजिए।

### खण्ड—ख

2. (अ) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए : 3×5=15

(क) आयुर्वेद में वात, पित्त और कफ

(ख) उपनिषदों का महत्व

(ग) वर्षा ऋतु में आहार

(घ) आयुर्वेद के षड्रस

- (ब) निम्नलिखित में से किसी एक की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्वयेव खल्विमाणि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं

[ 3 ]

प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति । सैषा भार्गवी वारूणी विद्या परमे  
व्योमेन प्रतिष्ठिता । स य एवं वेद प्रतितिष्ठति ।

अथवा

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् । विज्ञानद्वयेव खल्विमानि  
भूतानि जायन्ते । विज्ञानेन जातानि जीवन्ति । विज्ञानं  
प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति । तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं  
पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति ।

× × × × ×